मूंजा साथ सुहागी रे, हांणें अईं को न सुजाणो सिपरी।
पेरोनी पांण न सुजातां, आइडा से वरी रे।। १ ।।

हे मेरे सुहागी सुन्दरसाथजी! अब अपने प्रीतम को क्यों नहीं पहचानते हो? पहली बार भी हमने नहीं पहचाना। वह अब फिर से आए हैं।

सेई सजण सेई गालड्यूं, सेई कारयूं करीन।
पांण जो काजे पिरी पांहिंजा, पाणी अखियें भरीन।। २ ।।

वही अपने प्रीतम हैं। वही चर्चा है। उसी तरह से पुकार करके कहते हैं। अपने प्रीतम अपने लिए आंखों में आंसू भरकर समझाते हैं।

सेई सिखामण डियन सिपरी, ताणीन घर मणे।
पाण पाहियूं कीं ओसरूं, वलहो आव्यो वरी. करे।। ३ ।।

वही सिखापन (सीख) प्रीतम देते हैं। घर की तरफ बुलाते हैं। अब हम क्यों भूलें? प्रीतम दुबारा आए हैं।

कूकडियूं करीन पेहेलीनियूं, हांणें को न सुजाणो साथ।
न तां खरे बेपोरे सेज सोझरे, हाणे थींदी रात।। ४ ।।

पहली तरह से वह पुकार-पुकारकर कहते हैं कि हे सुन्दरसाथ! तुम क्यों नहीं सुनते? अब यदि नहीं सुनोगे तो दोपहर की कड़ी धूप में ही रात हो जाएगी (ज्ञान के उजाले में भी प्रीतम से वियोग हो जाएगा)।

पोए हथ हणंदा पटसे, हैडे डींदा घा।
सजण सूरे में वेही न रेहेंदा, हल्ली वेदानी हथ मंझां।। ५ ।।

पीछे हाथ पटक-पटक कर छाती पीटोगे। प्रीतम माया में (दुःख में) बैठे नहीं रहेंगे। वह अपने हाथ से चले जाएंगे।

धाएडियुं करीन पिरी, परी परी चए वेण।
पाणजे काजे पिरी बभेरां, पाण त्रेमाईन नेण।। ६ ।।

प्रीतम पुकार-पुकार कर तरह-तरह से वचन कहते हैं। हमारे लिए प्रीतम दुबारा आंखों से आंसू बहाते हैं।

मायातां डिठियां मंझ पेहीने, सोझरे सिपरियन।
भती भती जी रांद डेखारण, पिरी आंदो तारतम।। ७ ।।

हम माया में बैठकर माया देख रहे हैं, पर धनी तरह-तरह के खेल दिखाने के लिए तारतम ज्ञान का उजाला (जागृत बुद्धि का ज्ञान) लेकर आए हैं।

जा माया आं मोहें मंगई, सा डिठियां वी वार।
साथ हाणें पिरी साथ हल्लजे, जीं पिरी पेराईन करार।। ८ ।।

जो माया हमने मांगी थी, उसको दूसरी बार देख रहे हैं। हे साथजी! अब प्रीतम के साथ चलें जिससे वह आराम पाएं (उनके मन को करार मिले)।

Nijanand App

वभेरे पिरी पाणजे काजे, सायर में विधाऊं आप।
पाणजे काजे पांण विधाऊं, हाणें को न सुजाणो साथ।। ९ ।।

अपने लिए प्रीतम दुबारा माया (भवसागर) में आए हैं। जब अपने वास्ते ही वह आए हैं तो हे साथजी! तुम उनकी पहचान क्यों नहीं करते?

आकारतां अंई भले पसो था, पण पसो मंझियो तेज।
पिरी पांहिंजा पाण पाणसे, घणूं करीन था हेज।। १० ।।

हे साथजी! आप उनके तन को भले देखो, पर उनके अन्दर के ज्ञान के तेज को भी देखो। अपने प्रीतम अपने से बहुत प्यार करते हैं।

हांणें केही पर करियां आंसे, को न सुजाणों सेंण।
सजण सेई पुकार करीन, आंके निद्र अचे कीं नेंण।। ११ ।।

अब मैं तुम्हारे साथ क्या करूं? तुम प्रीतम को क्यों नहीं पहचानते? यह वही प्रीतम हैं और उनकी वही आवाज है। फिर तुमको नींद क्यों आती है? (उनकी पहचान क्यों नहीं होती)।

नेंणेंनी मंझां निद्र न वंजे, जे हेडी मथां थेई।
सेणेंसे अंई साथ न हल्यां, पोरयां कुरो कंदा रही।। १२ ।।

तुम्हारी आंखों से नींद नहीं जाती। ऐसी हालत क्यों हुई? यदि प्रीतम के साथ नहीं चले तो पीछे रहकर क्या करोगे?

हिन डुखे मंझा को न निकरयो, केहो डिसोथा भाल।
जडे हली वेंदा हथ मंझां, तडे केहा थींदा हाल।। १३ ।।

इस दुःख के संसार में से कोई नहीं निकला। किसका सहारा लेकर बैठे हो? जब प्रीतम हाथ से निकल जाएंगे तब तुम्हारा क्या हाल होगा?

पाणके हिन पिरी धारा, वेओ चोय ईं केर।
साथ संभारे न्हारयो दिलमें, जिन चुको हिन वेर।। १४ ।।

इन प्रीतम के बिना हमको दूसरा इस तरह से कौन कहेगा? हे सुन्दरसाथ! अपने दिल में विचार कर पहचानो और इस बार मत भूलो।

हिकडी आर चुके मांहड़ू, तेके वी आर अचे बुध।
हेतरा भठ वरंदे मथे, आंके अजां न वरे सुध।। १५ ।।

एक बार यदि मनुष्य चूक जाता है तो दूसरी बार उसे बुद्धि आ जाती है। इतनी आग तुम्हारे सिर पर जली (वाणी वचन तथा देवचन्द्रजी के वियोग की) फिर भी तुम्हें सुध नहीं आई।

हिक वेर म थीजा विसरया, हित न्हाय बेठे जो लाग।
अंख उघाडे ढकजे, कोडमी पातीमें थिए अभाग।। १६ ।।

इस बार अब मत भूलो। यहां बैठने का अवसर (समय) नहीं है। आंख खोलकर बन्द करने में जो समय लगता है, उसके करोड़वें हिस्से के समय में यदि तू जागेगा नहीं, तो तू अभागा (बदनसीब) हो जाएगा।

Nijanand App

आऊं खीजी आंके कीं चुआं, सा न वरे मूंजी जिभ।
पण अंई हिन माया मंझां, केही कढंदा निध।। १७ ।।

मैं तुम्हें खीजकर क्यों कहूं? मेरी जिह्वा से कठिन शब्द तुम्हारे लिए नहीं निकलते, पर तुम इसमें रहकर कौन-सा खजाना प्राप्त कर लोगे?

वेण विगो आंके चुआं, सा वढियां मुंहजी जिभ।
पण अंई हिनमें पई रह्या, हिन मंझां कां न थिंदियां सिध।। १८ ।।

तुम्हारे लिए कठिन शब्द यदि निकलें तो मैं अपनी जुबान के टुकड़े कर डालूंगी, पर तुम भी इसमें पड़े रहकर क्या करोगे? इसमें पड़े रहकर किसी का कोई काम सिद्ध नहीं हुआ।

हिन सोझरे जे न सुजातां, वभेरकां हीं ईं।
पोए सांणेनी सिपरियन अग्यां, मोंह खणदियूं कीं।। १९ ।।

इस दुपहरी के उजाले (जागृत बुद्धि के ज्ञान के उजाले) में दुबारा भी इस बार नहीं पहचाना तो फिर प्रीतम के सामने (घर चलकर) कैसे मुंह उठाएंगे?

पेरोनी पाण नजर न्हारींदे, व्यो अवसर हथां।
जडे हथे मंझे हली वेयां, तडे केहेडी थेईनी पाण मथां।। २० ।।

पहले भी अपने देखते-देखते हाथ से समय निकल गया और जब प्रीतम अपने में से चले गए तो अपने ऊपर कैसी बीती?

हींय हंद एहेडो आय, हिक वेरमें थिए वेणां।
साथ तां आईन सभे समझू, न्हाय केहे में मणां।। २१ ।।

यह स्थान ऐसा है कि एक पल में ही सब नष्ट हो जाएगा। हे सुन्दरसाथजी! आप सभी तो समझदार हैं। किसी में कोई कमी नहीं है।

साथ अंई कीं कीं न्हार्‌यो संभारे, गुण म छडो मोकरे मोय।
इंद्रावती चोय पेरे लगी, फिरी फिरीने केतरो चोय।। २२ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम कुछ तो देखो और पहचानो। अपने धनी को मत छोड़ो। माया से मोह मत करो। श्री इन्द्रावतीजी तुम्हारे चरणों में लगकर बार-बार कितना कहें कि तुम जागो।

।। प्रकरण ।। १७ ।। चौपाई ।। ३८० ।।

विनती–राग धनाश्री

हूं तां पिउजीने लागूं छूं पाय, मारा वाला जेम आ फेरो सुफल मारो थाय।
जेम पिउजी ओलखाय मारा पिउजी, सुणोने अमारी वालाजी विनती।। १ ।।

हे मेरे पियाजी! मैं आपके चरणों लगती हूं जिससे मेरा यह फेरा (जागनी का ब्रह्माण्ड) सफल हो जाए। हे मेरे पिया! किसी तरह से आपकी पहचान हो जाए। यह मेरी विनती है। उसे सुनो।

Nijanand App